प्रश्न 1.जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं-हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?

उत्तर-हेलेन केलर ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि जो लोग किसी चीज को निरंतर देखने के आदी हो जाते हैं वे उनकी तरफ़ अधिक ध्यान नहीं देते। उनके मन में उस वस्तु के प्रति कोई जिज्ञासा नहीं रहती। ईश्वर की दी हुई देन का वह लाभ नहीं उठा। सकते।

प्रश्न 2.'प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?

उत्तर-प्रकृति का जादू वह है जो प्रकृति के रूप में नित्य कुछ-न-कुछ परिवर्तन करता है। प्रकृति अपने रूप के आकर्षण से हमें अपनी ओर जादू की तरह आकर्षित करती है। प्रकृति में विविधता है, अलग-अलग वृक्षों की अलग-अलग घुमावदार बनावट और उनकी छाल और पत्तियाँ होना, फूलों का खिलना, कलियों की पंखुड़ियों की मखमली सतह, बागों में पेड़ों पर गाते पक्षी, कलकल करते बहते हुए झरने, कालीन की तरह फैले हुए घास के मैदान आदि प्रकृति के

प्रश्न 3.'कुछ खास तो नहीं'–हेलेन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य क्यों नहीं हुआ?

उत्तर-प्रकृति में चारों ओर देखने और समझने की बहुत सी चीजें हैं, फिर भी उनकी मित्र कह रही है कि मैंने कुछ खास नहीं देखा। लेखिका का मानना है कि वे कुछ भी देखना ही नहीं चाहती। वे उन चीजों की चाह ज़रूर करती हैं जो उनके आस-पास नहीं है।

प्रश्न 4.हेलेन केलर प्रकृति की किन चीज़ों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं? पाठ के आधार पर इसका उत्तर लिखो।

उत्तर-हेलेन केलर प्रकृति की अनेक चीजों जैसे भोज-पत्र पेड़ की चिकनी छालं, चीड़ की खुरदरी छाल, टहनियों में नई, कलियों फूलों की पंखुड़ियों की बनावट को छूकर और सँघकर पहचान लेती है।

प्रश्न 5.जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है'। -तुम्हारी नज़र में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर-हमारी आँखें अनमोल होती हैं। संसार की सारी खूबसूरती आँखों से ही है। जीवन के सभी रंग आँखों से ही हैं। अतः यह जिंदगी की बहुत बड़ी देन है। इसमें जिंदगी को रंगीन और खुशहाल बनाया जा सकता है और अपने सारे दुखों को भुलाया जा सकता है।

भाषा की बात

प्रश्न 1.पाठ में स्पर्श से संबंधित कई शब्द आए हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। बताओ कि किन चीजों का स्पर्श होता है-

www.kcph.com

1. चिकना .....
2. मुलायम .....
3. खुरदरा .....
4. सख्त .....
5. चिपचिपा .....
6. भुरभुरा .....

- **उत्तर-**
    - चिकना – तेल,घी, क्रीम में चिकनापन होना।
    - मुलायम – रेशमी कपड़ा
    - खुरदरा – लकड़ी व छाल खुरदरे होते हैं।
    - सख्त – लोहा,
    - पत्थर, लकड़ी
    - चिपचिपा – गोंद
    - भुरभुरा – रेत भुरभुरा होता है।

प्रश्न 2.अगर मुझे इन चीज़ों को छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा। ऊपर रेखांकित संज्ञाएँ *क्रमशः किसी भाव और किसी की विशेषता के बारे में बता रही हैं। ऐसी संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। गुण और भाव के अलावा भाववाचक संज्ञाओं का संबंध किसी की दशा और किसी कार्य से भी होता है। भाववाचक संज्ञा की पहचान यह है कि इससे जुड़े शब्दों को हम सिर्फ महसूस कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। आगे लिखी भाववाचक संज्ञाओं को पढ़ो और समझो। इनमें से कुछ शब्द संज्ञा और क्रिया से बने हैं। उन्हें भी पहचानकर लिखो-*

- भोलापन
- मिठास
- बुढ़ापा
- भूख
- घबराहट
- क्रोध
- शांति
- बहाव
- मज़दूरी
- ताज़गी
- अहसास
- मीठा

प्रश्न 3.मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हैं।
उस बगीचे में आम, अमलतास, सेमल आदि तरह-तरह के पेड़ थे।

www.kcph.com

ऊपर दिए गए दोनों वाक्यों में रेखांकित शब्द देखने में मिलते-जुलते हैं, पर उनके अर्थ भिन्न हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। वाक्य बनाकर उनका अर्थ स्पष्ट करो-

- अवधि – अवधी
- में – मैं
- ओर – और
- दिन – दीन
- मेल – मैल
- सिल – शील

उत्तर- अवधि – यह कार्य पूरा करने की अवधि 3 घंटे है।

अवधी – अवध क्षेत्र में अवधी भाषा बोली जोती है।

में – सुमन से मेरी मुलाकात बगीचे में हुई।

मैं – मैं दिल्ली का निवासी हूँ।

मेल – मित्रों को आपस में मेल से रहना चाहिए।

मैल – इस साबुन से कपड़े में मैल नहीं रहेगी।

ओर – यह रास्ता मेरे घर की ओर जाता है।

और – राम और श्याम भाई हैं।

दिन – आज दिन बड़ा सुहाना है।

दीन – हमें दीन-दुखियों की सहायता करनी चाहिए।

सिल – माँ सिल पर मसाला पीस रही है।

शील – शील स्वभाव के लोग सबको अच्छे लगते हैं।

www.kcph.com